इकाई 4 भावसाधन एवं चलितचक्र निर्माण

संरचना

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- भाव साधन एवं चलित चक्र के बारे में अध्ययन करेंगे।
- तन्वादि द्वादश भाव के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे ।
- भाव लग्न साधन कर पायेंगे।
- होरा लग्न साधन करेंगे ।
- घटी लग्न साधन कर पायेंगे।
- इष्टकाल – भयात – भभोग आदि साधन करके ग्रह स्पष्ट कर पायेंगे।
- स्पष्ट लग्न साधन करेंगे।
- जन्मांक चक्र का निर्माण कर पायेंगे।
- दशम लग्न साधन करेंगे।
- ससन्धि द्वादश भाव के विधि को समझकर इसका आनयन गणितीय प्रक्रिया से कर पायेंगे।
- चलित कुण्डली निर्माण के बारे में अध्ययन करके चलित चक्र आप लोग बनायेंगे।
- विंशोपकबल की जानकारी भी करेंगे।

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत पाठ्यक्रम खण्ड 2 " भाव साधन " नामक शीर्षक के अन्तर्गत चतुर्थ इकाई है, इस इकाई का नाम है " भाव साधन एवं चलित चक्र का निर्माण " इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप लोग यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि प्रथम भाव से लेकर द्वादश भाव पर्यन्त कुल 12 भाव होते हैं भाव के स्वामी ग्रह को भावेश कहते है तथा कर्मेश कहेंगे तो दशवें भाव में जो राशि है उसके स्वामी को कर्मेश समझना चाहिए । इस प्रकार चलित कुण्डली की बात करें तो आप लोगों को बताया गया है कि इस कुण्डली में ग्रह " खिसकते " हैं अर्थात एक भाव से दुसरे भाव से दुसरे भाव में जाते हैं। तथा सन्धि में कुछ ग्रह चले जाते है इसलिए इस कुण्डली से फल का विवेचन स्पष्ट रूप से करने में आसानी होती है। साथ ही चलित कुण्डली के अनुसार आप लोग स्पष्ट फल का विवेचन कर सकते है। जैसे मान लिजिए कि इस इकाई के अध्ययन क्रम में जो आगे उदाहरण बताया गया है, उस जन्मकुण्डली में मंगल व्यय भाव में स्थित है तथा जातक जन्मकुण्डली के अनुसार मांगलिक होगा क्योंकि 1, 4 ,7 , 8, 12 भाव में मंगल जन्मकुण्डली में या चन्द्र कुण्डली में स्थित होने पर जातक को मांगलिक जानना चाहिए तथा आप लोग चलित कुण्डली बनाना जानते हैं तो इस जातक के मांगलिक दोष नष्ट हो रहा है। इस प्रकार चलित चक्र द्वारा फलादेश करके आप लोग उस जातक का विवाह अमांगलिक कन्या के साथ करा सकते हैं ,यह है कि यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में कोई भी योग बन रहा हो तथा वह योग चलित चक्र में भी बना रहा हो अर्थात उस योग का सम्बन्ध चलित चक्र से हो तभी सम्पूर्ण फल उस योग का जातक को प्राप्त होगा । इस प्रकार हम आशा करते हैं कि आप लोगों को चलित चक्र के बारे में सामन्यतया ज्ञान हो गया होगा । अब आइए इसका अध्ययन करते हैं ।

4.2 भाव साधन एवं चलित चक्र के बारे में

जन्मकुण्डली में मुख्य रूप से फल का कथन लग्न से ही किया जाता है लेकिन लग्न के बाद अन्य संस्कार आदि का फल जिस विधा से किया जाता है उसको " चलित चक्र " कहते हैं। जैसे – जातक के जन्म के बारे में (पहले के समय में ज्योतिष के विद्वान ऋषि – मुनि आदि जन्म कुण्डली बनाने के लिए तुरीययन्त्र, शङ्कु इत्यादि यन्त्रों के द्वारा जन्म समय का ज्ञान, जन्मकालिक सूर्यादि ग्रहस्पष्ट, लग्नादि ससन्धि द्वादश भाव साधन करके, ग्रहों की दृष्टि एवं षड्बल विचार करके फल कथन करते थे) लेकिन आप लोगों को यहां पर इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि ससन्धि द्वादश भाव साधन के द्वारा जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों का फल पूर्णतया किया जाता है क्योंकि द्वादश भाव साधन के लिए इष्टकाल, भयात, भभोग, ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, दशमलग्न स्पष्ट, जन्मांक चक्र इत्यादि निर्माण करने के बाद ही चलित चक्र का निर्माण होता है, तथा भाव के आरम्भ में फल का आरम्भ होता है भाव के बराबर अंश में पूर्ण भाव का फल प्राप्त होता है। तथा इसके ह्रासक्रम में होने से भाव के विराम सन्धि में फल का अभाव होता है। (भाव से पूर्व की सन्धि आरम्भ सन्धि कहलाती है। तथा भाव के आगे की सन्धि विराम सन्धि कहलायेगी,) आरम्भ सन्धि से उस भाव का फल आरम्भ होता है तथा क्रमशः बढ़कर भाव में पूर्ण हो जाता है। भाव से आगे ह्रासक्रम से अग्रिम सन्धि में जाकर शून्य फल हो जाता है । इसलिए चलित चक्र का निर्माण करके जन्म, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण, राज्याभिषेक, विवाहादि कार्यों में ससन्धि द्वादश भाव का साधन करके चलित चक्र का निर्माण करके उनके द्वारा प्राप्त योगों के अथवा ग्रहों के फल को कहना चाहिए।

यथा – षोडश वर्गीय जन्म कुण्डली के फल में भी कमी का भान होगा बिना चलित कुण्डली के इसलिए चलित कुण्डली अवश्य बनानी चाहिए ।

भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृतिः पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ।

ह्रासक्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ।।

(मानसागरी अध्याय 2 श्लोक सं. 5)

4.2.1 द्वादश भाव के बारे में सामान्य जानकारी

जन्मकुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं। इसमें प्रथम " भाव " प्रथम कोष्ठक को कहते हैं। इन बारह भावों को ग्रहों का "घर " भी 'कहा जाता है और " स्थान " भी इसी को कहते है । साथ ही वामक्रम (बायें तरफ से) इसकी गणना किया जाता है। दूसरे कोष्ठक को द्वितीय भाव कहते हैं, तीसरे कोष्ठक को तृतीय भाव, चौथे कोष्ठक को चतुर्थ भाव, पांचवे कोष्ठक को पंचम भाव कहते हैं। छठें कोष्ठक को षष्ठ भाव कहते हैं, सातवें कोष्ठक को सप्तम भाव कहते हैं, आठवें कोष्ठक को अष्टम भाव कहते हैं, नवें कोष्ठक को नवम भाव कहते हैं, दसवें कोष्ठक को दशम भाव कहते हैं , ग्यारहवें कोष्ठक को एकादश भाव कहते हैं, बारहवें कोष्ठक को द्वादश भाव कहते हैं । साथ ही इन भावों में जो राशि स्थित हो उस राशि के स्वामी को उस भाव के भावेश या अधिपति कहते हैं। जैसे प्रथम भाव में वृष लग्न स्थित हो तो यहां पर वृष लग्न समझना चाहिए तथा वृष राशि के स्वामी शुक्र हैं इसलिए प्रथमभाव के स्वामी शुक्र हुए। इसी प्रकार अन्य भावों के स्वामी को समझना चाहिए इन भावों के और भी संज्ञायें ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है जिसको बताने का प्रयास किया जा रहा हैं ।

भावों की संज्ञा – जन्मकुण्डली के इन – इन भावों को केन्द्र – कण्टक – और चतुष्टय कहते हैं। जैसे – दशम भाव , प्रथमभाव सप्तम भाव और चतुर्थ भाव

प्रथम भाव , पंचम भाव और नवम् भाव को " त्रिकोण " कहते हैं । साथ ही नवें भाव को " त्रित्रिकोण " भी कहते हैं।

द्वितीय – पंचम – अष्टम और एकादश भावों को " पणफर " कहते हैं।

तीसरे, छठे, नवें, और बारहवें भाव को " आपोक्लिम " कहते हैं ।

चतुर्थ और अष्टम भाव को " चतुरस्र " कहते है केन्द्र में स्थित ग्रह बाल अवस्था में फल देते हैं । पणफर भाव में स्थित ग्रह युवा अवस्था में फल प्रदान करते हैं । तथा आपोक्लिीम भाव में स्थित ग्रह वृद्धा अवस्था में फल प्रदान करते हैं ।

भावों की अन्य संज्ञायें – दुश्चिक्य का आशय है तृतीय भाव से , आय मतलब एकादश भाव, और षष्ठभाव – मान, दशम भाव इन भावों को उपचय भी कहते है। और शेष अन्य भावों को जैसे – द्वितीय भाव को " धन " चतुर्थ भाव को " जल " पंचम भाव को " धी " सप्तम भाव को " काम " अष्टम भाव को "रन्ध्र " द्वादश भाव को " अन्त्य " और प्रथम भाव को " लग्न एवं होरा " और पीडर्क्ष भी कहते हैं ।

जन्म अथवा प्रश्न काल में जो राशि अपने स्वामी से बुध – शुक्र – बृहस्पति से युत अथवा दृष्ट हो तथा अन्य ग्रहों से युत– दृष्ट न हों तो वह शुभफल देने वाले होते हैं।

4.2.2 भावलग्न साधन विधि

सूर्योदय से जन्मसमय तक प्रत्येक 5–5 घटी के हिसाब से एक – एक लग्न का प्रमाण होता है। और वह भाव लग्न होता है। अतः अपने इष्टकाल में 5 से भाग देने

पर जो राश्यादि लब्धि आती है उसे उदयकालीन स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से राश्यादि स्पष्ट भाव लग्न होता है।

जैसे – इष्टकाल है 5 |25 को 2 से गुणा किया तो 10 |50 हुआ । इसमें 5 का भाग दिया तो 2 |10 |0 |0 राश्यादि हुए। इसमें उदयकालीन सूर्य 3 |20 |4 |25 में योग किया तो 6 |0 |4 |25 हुआ यही भाव लग्न हुआ।

4.2.3 होरा लग्न साधन

सूर्योदय से जन्म इष्टकाल तक प्रति ढ़ाई घटी में एक – एक होरा लग्न का प्रमाण होता है । अतः अपने इष्टकाल को 2 से गुणाकर 5 का भाग देने पर जो राश्यादि लब्धि हो उसे उदयकालीन सूर्य में जोड़ने से स्पष्ट होरा लग्न होता है।

जैसे – जन्मेष्टकाल 5 |25 को 2 से गुणा किया तो 10 |50 हुआ । इसमें 5 का भाग दिया तो

2 | 10 |0 |0 राश्यादि हुए । इसमें उदयकालीन सूर्य 3 |20 |4 |25 में योग किया तो 6 |0 |4 |25 हुआ । और यही होरा लग्न हुआ ।

4.2.3 घटी लग्न साधन

सूर्योदय से एक – एक घटी के प्रमाण से जो लग्न व्यतीत होता है, उसे घटी लग्न कहा जाता है। अतएव इष्ट घटी को राशि (12 से अधिक होने पर 12 से तष्टित करें) एवं इष्टपल को 2 का भाग देकर अंशादि जानना चाहिए पुर्वोक्त राशि और अंशादि को उदयकालिक स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से घटी लग्न होता है ।

भाव लग्न , होरा लग्न, घटी लग्न , इन तीनों को अलग – अलग लिखकर कुण्डली बनाकर जिस –जिस राशि में जो –जो ग्रह हो उन – उन राशि में स्थापित करके फल को कहना चाहिए ।

जैसे – इष्टकाल 5 |25 इस इष्टकाल में 5 घटी और 25 पल है। अतः इसमें 2 से भाग दिया तो 12 |30 |0 अंशादि हुआ, अतः राश्यादि 5 |12 |30 |0 हुए इसे उदयकालिक सूर्य 3 |20 |4 |25 में जोड़नें से 9 |2 |34 |25 हुआ, यही घटी लग्न हुआ ।

इन तीनों लग्नादिभावों के 15 – 15 अंश दीप्तांश होते है, अतएव भावंश से 15 अंश पूर्व से ही भाव आरम्भ होता है । और भावांश से फलारम्भ और भावान्त में फलान्त हो जाता है। भावांश तुल्य ग्रहों के अंश हो तो पूर्णफल और भाव के अन्त में शून्य फल हो जाता है। अतः भाव और सन्धि के मध्य में ग्रह हो तो अनुपात से फलादेश करना चाहिए ।

4.3 द्वादश भाव साधनार्थ इष्टकाल आदि साधन

तन्वादि द्वादश भाव और चलित चक्र का निर्माण करने के लिए इष्टकाल, भयात, भभोग, ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट और दशमलग्न की आवश्यकता होती है तो आइए वर्तमान उदाहरण के अनुसार इसका अध्ययन करते हैं।

श्री संवत् 2077 शाके 1942 उत्तरायण दक्षिण गोल वसन्त ऋतु चैत्र मास कृष्णपक्ष तदनुसार अंग्रेजी दिनांक 12/04/2021 को किसी जातक का जन्म दिन में ठीक 10 बजकर 22 मिनिट पर वाराणसी में हुआ। अतः वाराणसी का अक्षांश 25 |18 ,पलभा 5 |45 अर्हगण 2281, अयनांश 24 | 8 | 15 है। दिनमान 31 |21 इसी दिन का पंचांग है।

तिथि अमावस्या 3 घटी 6 पल प्रातः 6 बजकर 58 मिनिट तक, वर्तमान तिथि प्रतिपदा, दिन सोमवार, रेवती नक्षत्र 12 घटी, 19 पल, दिन में 10 बजकर 40 मिनिट तक तथा बिता हुआ नक्षत्र उत्तराभाद्रपद 7 घटी , 6 पल, दिन में 8 बजकर 35 मिनिट तक वैधृति योग 20 घटी , 9 पल, दिन में 1 बजकर 48 मिनिट तक, नाग करण 3 घटी 6 पल सूर्योदय 5 बजकर 44 मिनिट , सूर्यास्त 6 बजकर 16 मिनिट सोमवती अमावस्या का दिन ।

जातक का जन्म दिनांक :– 12/04/2021

जन्म समय :– 10 बजकर 22 मिनिट दिन में ।

जन्म स्थान :– वाराणसी उ.प्र.

अक्षांश :– 25 | 20

रेखांश :– 83 | 00

अयनांश :– 24 | 9 |15

स्थानिक जन्म समय :– 10 बजकर 24 मिनिट दिन में ।

स्थानिक समय संस्कार :–1 मिनिट 59 सेकेण्ड का।

सूर्योदय :– 5 बजकर 40 मिनिट प्रातः।

सूर्यास्त :– 6 बजकर 16 मिनिट सांय

इष्टकाल :– 11 घटी,44 पल,14 विपल

भयात :– 64 | 38

भभोग :– 63 |13

रेवती नक्षत्र 4 चरण

।। सूर्यादि स्पष्ट ग्रहाः ।।

ग्रहाः	राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	गति	58	49
सूर्य	11	28	21	30	आर्दा 3			
चन्द्रमा (अस्त)	11	29	26	20	रेवती 4	गति	759	17
मंगल	1	29	1	23	मृगशिरा 2	गति	34	38
बुध (अस्त)	11	20	59	45	रेवती 2	गति	112	58
बृहस्पति	10	1	10	41	धनिष्ठा 3	गति	10	7
शुक्र (अस्त)	0	2	40	40	अश्विनी 1	गति	74	40
शनि	9	18	1	3	श्रवण 3	गति	2	48
राहु (वक्री)	1	19	20	57	रोहिणी 3	गति	3	11
केतु (वक्री)	7	19	20	57	ज्येष्ठा 1	गति	3	11

4.3.1 लग्न साधन के उदाहरण

11 । 28 । 21 । 30 स्पष्ट सूर्य में

\+ 24 । 09 । 15 अयनांश जोड़ा

---

0 । 22 । 30 । 45 यह हुआ सायन सूर्य । यहां पर सायन सूर्य मेष राशि के है।

अतः मेष राशि का भुक्तांश 22 । 30 । 45 है। इसका भोग्यांश बनाने के लिए 1 राशि में से घटाया ।

1 । 00 । 00 । 00 एक राशि में से

− 22 । 30 । 45 भुक्तांश को घटाया

---

0 । 07 । 29 ।15 तो ये हुआ सायन सूर्य का भोग्यांश ।

अब यहां पर सायन सूर्य का भोग्यांश भी मेष राशि का ही होगा इसलिए वाराणसी के उदयमान से गुणा किया और 60 से भाग दिया तो ये आया ।

तृतीय अंक 15 × 221 = 15

द्वितीय अंक 29× 221 = 44

प्रथम अंक 7 × 221 = 1654

यहां पर प्रथम अंक 1654 में 30 का भाग दिया तो लब्धि आयी 55 ये पल प्राप्त हुआ। तथा पहली अंक राशि पल है। आगे वाली राशियां विपलादि है। गणित क्रिया में केवल पलों का उपयोग होता है। इसलिए और राशियों का परित्याग किया तो मात्र 55 पल ग्रहण किया । तथा इष्टकाल को पलात्मक बनाया।

इष्टकाल है 11 । 44 । 14 इसको पलात्मक बनाया तो ये हुआ 718 ये पलात्मक इष्टकाल हुआ । इसमें 55 पल घटाया । तो 718 − 55 = 663

यहां पर मेष राशि के उदयमान से गुणाकर के क्रिया की गयी थी अतः इसमें आगे वाली राशियों का उदयमान घटायेंगे।

663

− 254

---

409 वृष राशि

− 304

---

105 मिथुन राशि

अब यहां पर मिथुन राशि तक उदयमान इष्टकाल के पलों में से घट गया था । अतः मिथुन राशि शुद्ध हुआ एवं कर्क राशि अशुद्ध हुआ । तथा शेष में 30 से गुणा किया ।

105 × 30 = 3150 इसमें अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग दिया तो 9 अंश आया । अब कला , विकला, लाने के लिए शेष में 60 का गुणा किया और पुनः कर्क के उदयमान से भाग दिया । तो 12 कला और 37 विकला आया जैसे −

3150 ÷ 342 = 9 अंश, शेष (72 ×60) = 4320

4320 ÷ 342 = 12कला शेष(216 × 60) = 12960

12960 ÷ 342 = 37 विकला आया ।

अब यहां पर मिथुन राशि घट गयी थी अतः लग्न के स्थान पर लग्नांक 3 माना जाएगा ।

03 । 09 । 12 । 37 तो ये हुआ सायन लग्न इसमें
− 24 । 09 15 अयनांश घटाया

02 ।15 । 03 । 22 स्पष्ट लग्नस्पष्ट आया मिथुन राशि का

इस प्रकार आप लोग पलभा, चरखण्ड, उदयमान द्वारा लग्न साधन कर सकते हैं।

4.3.2 जन्मांक चक्र का निर्माण

लग्न को कुण्डली में प्रथम स्थान में रखकर उसके बाद आगे की राशियों को क्रमशः रखकर ग्रहस्पष्ट के अनुसार जिस राशि में जो ग्रह हो उसको उस राशि में रखने से जन्म कुण्डली बनती है। तथा जन्म राशि को लग्न मानकर जन्मकुण्डली की तरह ग्रहों को स्थापित करने से चन्द्र कुण्डली बनती हैं।

अब इस उदाहरण के अनुसार जन्मकुण्डली का निर्माण इस प्रकार होगा ।

।। अथ जन्मांक चक्रमिदम् ।।
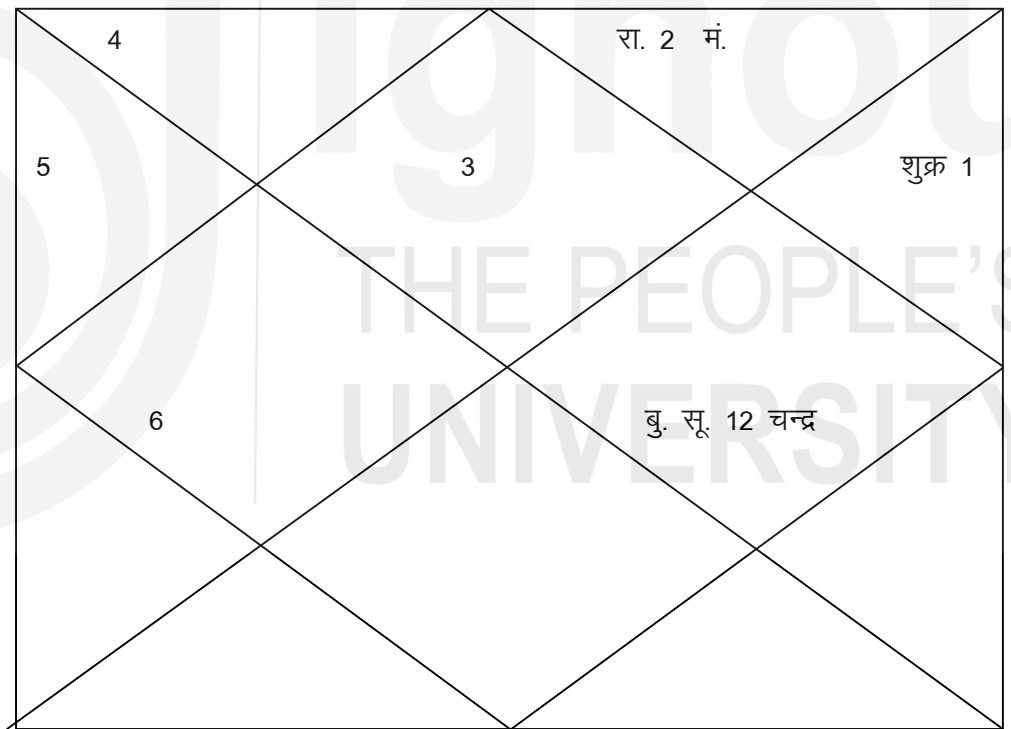
4.3.3 दशमलग्न साधन

अब यहां पर भुक्त प्रकार से दशमलग्न साधन किया जायेगा क्योंकि पूर्वनत है इसलिए उस दिन के स्पष्ट सूर्य है 11 ।28 ।21 ।30 तथा अयनांश है 24 ।09 ।015 तथा सर्वप्रथम भुक्तांश और भोग्यांश बनाने के नियम को सर्वप्रथम जानेंगे।

11 । 28 । 28 । 21 स्पष्ट सूर्य में
+ 24 । 09 । 15 अयनांश जोड़ा

0 । 22 । 30 । 45 सायन सूर्य का भुक्तांश है।

यहां पर सायन सूर्य मेष राशि का है। तथा मेष राशि का भुक्तांश 22। 30। 45 है। इसका भोग्यांश बनाने के लिए 1 राशि में से घटाया।

1। 00। 00। 00 एक राशि में से
– 22। 30। 45 भुक्तांश को घटाया

0। 07। 29।15 तो ये हुआ सायन सूर्य का भोग्यांश।

अब यहां पर सायन सूर्य का भुक्तांश है 0।22।30।45 है,

इसमें सायन सूर्य मेष राशि के होने के कारण इसमें मेष राशि के लंकोदयमान से गुणा करेंगे।

0।22।30।45 × 278 = 208।18।28।30 ये भुक्तपल हुआ।

अब नत को पलात्मक बनाया तो नतकाल है 3।56।30 तो पलात्मक नतकाल हुआ 266 पल आया।

266।00।00।00 – 208।18।28।30 = 57।41।31।30

इसमें से भुक्तफल को घटाया तो ये हुआ 57।41।31।30 इसमें उल्टे क्रम से लंकोदयमान को घटाया नियमानुसार तो मीन राशि का लंकोदयमान नहीं घटा इसका मान है 278 इसलिए मीन राशि शुद्ध–अशुद्ध राशि हुआ।

चूंकि सायन सूर्य मेष राशि का है इसलिए उल्टे क्रम से घटाने से मीन राशि आया। अब इस भुक्त पल में नियमानुसार 30 से गुणा किया।

57।41।30 × 30 = 1730।40।45 हुआ। इसमें अशुद्ध–शुद्ध राशि मीन के लंकोदयमान से 278 से भाग दिया तो यु हुआ 6 अंश ,13 कला 31 विकला लब्धि प्राप्त हुआ।

अब यहां पर मीन राशि का लंकोदयमान नही घटा था अतः मीन राशि अशुद्ध–शुद्ध राशि की संख्या 12 में जोड़ने से यें हुआ 12।6।13।31 हुआ यह सायन दशमलग्न हुआ ।

12।6।13।31 सायन दशम लग्न में से
– 24।09।15 अयनांश घटाया

11।12।04।16 यह स्पष्ट दशम लग्न हुआ ।

4.3.4 ससन्धि द्वादश भावसाधन विधि एवं गणितीय प्रक्रिया से आनयन

नियम – 1 लग्न में 6 राशि जोड़ने से सप्तमभाव होता है और दशमलग्न में 6 राशि मिलाने से चतुर्थ भाव होता है।

जैसे – लग्न में 6 राशि जोड़ने से 2।15।3।22 + 6।0।0।0 = 8।15।3।22 यह सप्तम भाव हुआ और दशमलग्न में 6 राशि जोड़ने से 11।12।4।16 + 6।0।0।0 = 5। 12 । 4 ।16 यह चतुर्थ भाव हुआ ।

नियम – 2 चतुर्थ भाव में से लग्न घटाकर शेष में 6 का भाग देने से लब्धि को लग्न में जोड़ने से लग्नसन्धि होगी, और सन्धि में लब्धि को जोड़ने से द्वितीय भाव होगा। इसी तरह आगे जोड़ने से चतुर्थ भाव पर्यन्त ससन्धि भाव होगा।

चतुर्थ भाव 5 |12 |4 | 16 – 2 |15 |3 |22 = 2 |27 |0 |54 आया इसको 30 से गुणा किया तथा एकजातीय बनाया और 6 से भाग दिया तो लब्धि आया 14 |30 |09 यह षष्ठ्य्ंश हुआ। अब इस षष्ठ्य्ंश को लग्न में जोड़ने से प्रथम भाव की सन्धि होगी ।

प्रथम भाव 2 |15 |3 |22 + 14 |30 |9 = 2 |29 |33 |31 सन्धि
सन्धि 2 |29 |33 |31 + 14 |30 |9 = 3 |14 |3 |40 द्वितीय भाव
द्वितीय भाव 3 |14 |3 |40 + 14 |30 |9 = 3 |28 |33 |49 सन्धि
सन्धि 3 |28 |33 |49 + 14 |30 |9 = 4 |13 |3 |58 तृतीय भाव
तृतीय भाव 4 |13 |3 |58 + 14 |30 |9 = 4 |27 |34 |7 सन्धि
सन्धि 4 |27 |34 |7 + 14 |30 |9 = 5 |12 |4 |16 चतुर्थ भाव

नियम – 3 षष्ठ्य्ंश को 1 राशि में से घटाने पर तथा चतुर्थ भाव आदि में जोड़ने से ससन्धि चतुर्थ भाव से सप्तमभाव तक भाव एवं सन्धि दोनों होंगे। और लग्नादि ससन्धि 6 भावों में 6 राशि जोड़ने पर सप्तमभाव से द्वादश भाव पर्यन्त ससन्धि सहित द्वादश भाव होगा।

अब इसके बाद नियमानुसार षष्ठ्य्ंश 14 |30 |09 को 1 राशि में से घटाया तो 1 |0 |0 |0 – 14 |30 |09 = 15 |29 |51 शेष फल आया।

चतुर्थ भाव में शेषफल को जोड़ने से

5 |12 |4 |16 + 15 |29 |51 = 5 |27 |34 |7 चतुर्थ भाव की सन्धि हुआ।

इस सन्धि में शेषफल जोड़ने से

5 |27 |34 |7 + 15 |29 |51 = 6 |13 |3 |58 पंचम भाव हुआ ।

पंचम भाव में शेषफल जोड़ने से

6 |13 |3 |58 +15 |29 |51 = 6 |28 |33 |49

पंचम भाव सन्धि हुआ ।

इस सन्धि में शेषफल जोड़ने से

6 |28 |33 |49 +15 |29 |51 = 7 |14 |3 |40 षष्ठ भाव हुआ

षष्ठ भाव में शेषफल जोड़ने से

7 |14 |3 |40 +15 |29 |51 = 7 |29 |33 |31 षष्ठ भाव की सन्धि हुआ ।

इस सन्धि में शेषफल जोड़ने से

7 |29 |33 |31 +15 |29 |51 = 8 |15 |3 |22 सप्तम भाव हुआ

अब इसके बाद आप लोगों को सन्धि सहित द्वादश भाव का कोष्ठक बना कर बता रहे है जिससे आप लोग पूर्णतया समझ पायेंगे ।

।। ससन्धि द्वादश भाव सारिणी ।।

लग्न	सन्धि	धन	सन्धि	सहज	सन्धि	सुख	सन्धि	सुत	सन्धि	रिपु	सन्धि
2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7
15	29	14	28	13	27	12	27	13	28	14	29

3	33	3	33	3	34	4	34	3	33	3	33
22	31	40	49	58	7	16	7	58	48	40	31
जाया	सन्धि	मृत्यु	सन्धि	धर्म	सन्धि	कर्म	सन्धि	आय	सन्धि	व्यय	सन्धि
8	8	9	9	10	10	11	11	0	0	1	1
15	29	14	28	13	27	12	27	13	28	14	29
3	33	3	33	3	34	4	34	3	33	3	33
22	31	40	49	58	7	16	7	58	48	40	31

4.3.5 चलित चक्र निर्माण विधि

नियम 1 ग्रह अपने भाव की गत सन्धि से अधिक तथा एष्य सन्धि से कम हो तो उसी भाव में रहेगा। यदि गत सन्धि से अल्प हो तो पिछले भाव में ग्रह जायेगा , और एष्य सन्धि से अधिक हो तो अगले भाव में ग्रह जायेगा। इस तरह ग्रहों का विन्यास करने पर चलित कुण्डली बनती है।

नियम 2 चलित चक्र ज्ञात करने के लिए ग्रहस्पष्ट और भाव स्पष्ट के साथ तुलनात्मक विचार करना चाहिए। यदि ग्रह की राश्यादि भावराश्यादि के तुल्य हो तो वह ग्रह उस भाव में, और उसके राश्यादि भावसन्धि के राश्यादि के समान हो अथवा भाव के राश्यादि से आगे और भाव सन्धि के राश्यादि से पीछे हो तो भाव सन्धि में एवं आगे वाले या पीछे वाले भाव के राश्यादि के समान हो तो आगे या पीछे के भाव में ग्रह को समझना चाहिए।

नियम 3 दो भावों के योगार्ध को सन्धि कहते हैं। सन्धि में ग्रह निर्बल होता है। ग्रह सन्धि से हीन हो तो पूर्वभाव का फल देता है और सन्धि से अधिक हो तो आगामी भाव से उत्पन्न फल को प्रदान करता है। भावेश तुल्य वर्तमान भाव ही अपना पूर्ण फल देता है। भाव से हीन या अधिक होने पर फल न्यूनाधिक होता है। ग्रहों के भाव की प्रवृति से ही फल की निष्पति होती है और भावेश के तुल्य ग्रह पूर्ण फल देता है। हीनाधिक होने से फल में ह्रास या वृद्धि होती जाती है।

ताजिनीलकण्ठी के अनुसार दोनों सन्धियों के मध्यभाग में विद्यमान ग्रह बीच वाले भाव का फल देता हैं।

नियम 4 अब उपरोक्त नियमानुसार यहां पर आप लोगों को उदाहरण के अनुसार बताया जा रहा है। जन्म कुण्डली में जो लग्न होता है वही लग्न चलित कुण्डली में भी होता है लेकिन आप लोगों को एक बात ध्यान में रखना है कि जैसे जन्मकुण्डली चक्र का निर्माण करते है ठीक उसी तरह चलित चक्र (चलित कुण्डली) भी बनाया जाता है। परन्तु इसमें कुण्डली के भाव में स्थित ग्रह एवं सूर्यादि ग्रह स्पष्ट तथा ससन्धि द्वादश भाव में स्पष्ट राश्यादि की तुलना करके चलित चक्र में ग्रहों को स्थापित किया जायेगा इस बात को उदाहरण के अनुसार बताया जा रहा है आप लोगो की सुविधा के लिए।

।। चलित चक्र ।।
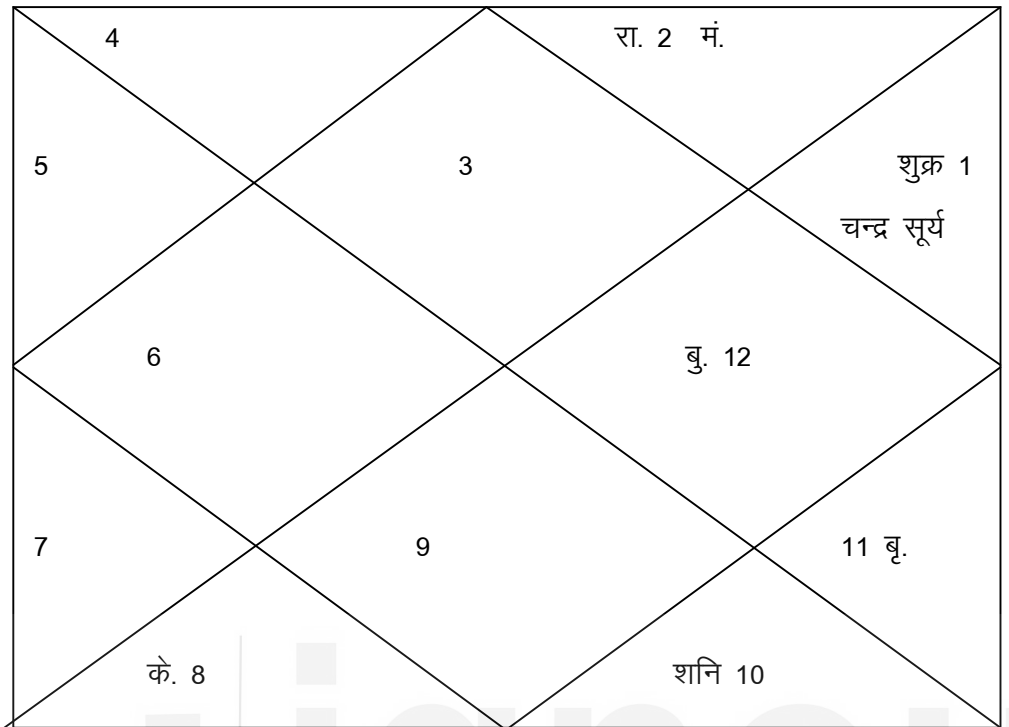
उदाहरण – इस जातक के जन्म कुण्डली में स्पष्ट सूर्य कर्म भाव में स्थित हैं तथा इनकी स्पष्ट राश्यादि 11 |28 |21 |30 और ससन्धि द्वादश भाव में कर्म भाव स्पष्ट है राश्यादि 11 |12 |4 | 16 तथा कर्म भाव की अग्रिम सन्धि 11 |27 |34 |7 है तथा यहां पर स्पष्ट सूर्य की अंशादि अग्रिम सन्धि से भी अधिक है अतः यहां पर सूर्य को लाभ भाव अर्थात एकादश भाव में माना जायेगा ।

चन्द्रमा भी इस जातक के जन्मकुण्डली में कर्म भाव में स्थित है तथा चन्द्रमा की स्पष्ट राश्यादि हैं 11 |29 |26 |20 तथा ससन्धि द्वादश भाव चक्र में कर्म भाव स्पष्ट है 11 |12 |4 |16 एवं कर्म भाव की अग्रिम सन्धि 11 |27 |34 |7 है चूंकि इस अग्रिम सन्धि की अंशादि से भी चन्द्रमा की स्पष्ट राश्यादि अंश अधिक है अतः चन्द्रमा को लाभ भाव में ही माना जाएगा ।

मंगल इस जातक के जन्मकुण्डली में व्यय भाव में स्थित है तथा स्पष्ट मंगल 1 |29 |1 |23 है एवं व्यय भाव की अग्रिम सन्धि है 1 |29 |33 |31 अतः यहां पर मंगल के स्पष्ट राश्यादि की अंशादि और ससन्धि द्वादश भाव की अग्रिम सन्धि का अंश समान है। इसलिए यहां पर मंगल को व्यय भाव की सन्धि में माना जायेगा ।

इस जातक के जन्मकुण्डली में बुध कर्मभाव में स्थित है एवं स्पष्ट मंगल 11 |20 |59 |45 है तथा कर्मभाव की अग्रिम सन्धि है 11 |27 |34 |7 अतः बुध कर्मभाव के अंशादि से अधिक है तथा अग्रिम सन्धि से कम है। अतः बुध इसी भाव में रहेंगे अर्थात् बुध को कर्मभाव में माना जायेगा।

इस जातक के जन्मकुण्डली में बृहस्पति धर्म भाव में स्थित है तथा स्पष्ट बृहस्पति 10 |1 |10 |41 तथा धर्मभाव 10 |13 |3 |58 है। अतः गुरू धर्मभाव के गत सन्धि से अधिक है तथा अग्रिम सन्धि की अंशादि से कम है। अतः बृहस्पति को धर्मभाव में माना जायेगा।

इस जातक के जन्मकुण्डली में शुक्र लाभ भाव में स्थित है तथा स्पष्ट शुक्र है 0 |2 |40 |40 अतः शुक्र इसी भाव में माना जायेगा क्योंकि लाभ भाव की गत सन्धि से

अधिक और अग्रिम सन्धि से कम होकर लाभ के अन्तर्गत हो रहे हैं । इसलिए शुक्र यहां पर एकादश भाव में ही रहेंगे ।

ठीक इसी प्रकार आप लोगों को अन्य जगह भी चलित कुण्डली का निर्माण करना चाहिए ।

इस प्रकार शनि अष्टम भाव में, राहु व्यय भाव में एवं केतु को षष्ठभाव में समझना चाहिए।

विंशोपक बल विचार – ग्रह तथा सन्धि के अन्तर को 20 से गुणाकर भाव तथा सन्धि के अन्तर से भाग देने से विंशोपक बल प्राप्त होता है। भाव के समान ग्रह रहने से पूर्णफल होगा और सन्धि के समान रहने से ग्रह निष्फल होगा भाव तथा सन्धि के बीच में रहने से अनुपात द्वारा उसका विंशोपक बल समझना चाहिए।

4.4 सारांश

मुझे इस बात की पूर्णतया आशा है कि अब आप लोगों को ससन्धि द्वादश भाव साधन करने में तथा चलित कुण्डली निर्माण करने में अब कोई समस्या नहीं आयेगी । इस इकाई में आप लोगों ने अध्ययन किया कि ससन्धि द्वादश भाव साधन करने के लिए लग्न तथा दशमलग्न की आवश्यकता होती है क्योंकि लग्न में 6 राशि मिलाने से सप्तमभाव होता है, तथा दशम लग्न में 6 राशि जोड़ने चतुर्थ भाव होता हैं । चतुर्थ भाव में लग्न घटाकर शेष में 6 का भाग देने से जो लब्धि आवे उसको लग्न में जोड़ने से चतुर्थ भाव तक सन्धि सहित भाव आता है। तथा लब्धि को 1 राशि में से घटाकर जो लब्धि आये उसको चतुर्थ भाव में जोड़ने से सन्धि सहित सप्तमभाव तक भाव आयेगा तथा लग्नाादि सन्धि सहित 6 भावों में 6 राशि जोड़ने से सप्तमभाव से द्वादश भाव पर्यन्त सन्धि सहित द्वादश भाव सिद्ध होगा । इसी को आप लोगों को ससन्धि द्वादश भाव समझना चाहिए। जहां तक चलित चक्र की बात करें तो ग्रह अपने भाव की पूर्वसन्धि से अधिक तथा अग्रिम सन्धि से कम हो तो उसी भाव में रहता है जिस भाव में जन्मकुण्डली में स्थित है तथा यदि पूर्वसन्धि से कम हो तो पिछले भाव में ग्रह जायेगा , और अग्रिम सन्धि से अधिक हो तो अगले भाव में ग्रह जायेगा। साथ ही पूर्व सन्धि या अग्रिम सन्धि के अंश के बराबर ग्रह का अंश हो तो , पूर्व सन्धि के बराबर अंश होने पर पूर्वसन्धि में ग्रह जायेगा तथा अग्रिम सन्धि के बराबर अंश हो तो ग्रह उस भाव के अग्रिम सन्धि में जायेगा । इस प्रकार हम आशा करते है कि पाठक गण इन सभी विषयों का विस्तृत विचार कर के ससन्धि द्वादश भाव तथा चलित कुण्डली का निर्माण बहुत ही सुगमता से कर सकते है। तथा जन्म कुण्डली में स्थित योगों का चलित चक्र के अनुसार शुभाशुभ फल विवेचन कर सकते है।

4.5 शब्दावली

ससन्धि = भाव के पूर्व भी सन्धि होती है तथा भाव के आगे भी सन्धि होती है पूर्वसन्धि को ही गतसन्धि कहते है तथा आगे वाले सन्धि को अग्रिम सन्धि अथवा एष्य सन्धि भी कहते है।

सन्धि = दो भावों के योगार्ध को सन्धि कहते है तथा सन्धि में स्थित ग्रह निर्बल होता है।

चलित कुण्डली = चलित का आशय होता है कि इसमें ग्रहों की स्थिति चल,चलायमान होती है अर्थात ग्रह आगे –पीछे जाते रहते हैं जिसको चलित नाम से जानते है। कुण्डली का आशय है 12 भाव, चलित कुण्डली बनाने के लिए स्पष्ट ग्रह

और ससन्धि द्वादश भाव के साथ तुलनात्मक विचार कर के बनाने वाली कुण्डली को चलित कुण्डली कहते हैं । इसमें जो लग्न स्पष्ट होता है उसी के अनुसार भाव बनते है। चलित चक्र की जन्मपत्री मे आवश्यकता रहती है क्योंकि चलित के बिना ग्रहों के स्थान का ठीक ज्ञान नहीं हो सकता है।

ससन्धि द्वादश भाव = सन्धि सहित तनु–धन–भ्रतृ–सुख–विद्या–शत्रु–स्त्री–मृत्यु–धर्म–कर्म–आय–व्यय आदि भाव स्पष्ट को ससन्धि द्वादश भाव कहते है।

भाव = कुण्डली के कोष्ठक को भाव कहते हैं प्रथम खाने को प्रथम भाव,द्वितीय खाने को द्वितीय भाव इस प्रकार द्वादश भाव कुण्डली में होते हैं ।

विंशोपकबल = ग्रहों के शत्रुता और मित्रता के अनुरूप बनने वाले बल को विंशोपक बल कहते हैं तथा दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि स्पष्ट ग्रह और ससन्धि द्वादश भाव स्पष्ट के बल को विंशोपक बल कहते हैं । ग्रहों के भाव और दृष्टि का विचार करके सूक्ष्मफल को कहा जाता है।

भावबल = भाव बल तीन बलों से मिलकर बनता है भाव के स्वामी का बल, भाव दिग्बल, भाव दृष्टि बल, इसके अनुसार जो ग्रह जिस भाव में रहता है उसके अनुसार शुभाशुभ फल को भाव बल के अन्तर्गत समझना चाहिए।

चलित = ग्रहों की चल स्थिति

ससन्धि = सन्धि सहित

भाव फल = भावों का फल

अधिपति = स्वामी (मालिक)

राश्यंश = राशि और अंश

4.6 बोध प्रश्न

1) चलित चक्र बनाने के लिए इष्टकाल, भयात्, भभोग एवं ग्रहस्पष्ट साधन कीजिए।
2) स्पष्ट लग्न साधन कैसे होता है।
3) दशमलग्न साधन कीजिए।
4) ससन्धि द्वादश भाव साधन कीजिए।
5) चलित चक्र का निर्माण कीजिए।

4.7 उपयोगी पुस्तकें

1) भारतीय ज्योतिष, लेखक – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ पैतीसवां संस्करण वर्ष 2002
2) बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, टीकाकार – पं.– पद्मनाभ शर्मा, प्रकाशक – चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, (भारतीय संस्कुति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक), के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन पो. बो. न. 1129, वाराणसी 22101 दूरभाष 2335263
3) भारतीय कुण्डली विज्ञान, लेखक – मीठालाल हिम्मतराम ओझा, ई.स. 2008 देवर्षि प्रकाशन डी.3/40 मीरघाट वाराणसी